“कोड परिवर्तन का सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक परिपेक्ष्य”

(विशेष संदर्भ–हिंदी के कुछ उपन्यासों में)

कोड एक समाज भाषा वैज्ञानिक संप्रत्यय है जिसका संबंध वक्ता के सामाजिक संबंधो को स्थापित करने के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले विभिन्न सामाजिक संदर्भो से होता है। कोड (नियम संहिता) नियमों का एक समुच्चय माना जा सकता है। जो वक्ताओं/प्रयोक्ताओं के पारस्परिक बोधगम्यता का आधार हो। जिस कोड (भाषा)का प्रयोग वक्ता करता है वह सामाजिक संस्कृतिक व्यवस्था द्वारा निर्धारित और संचालित होता है। वाक् सामाजिक संबंधो के प्रतिकात्मक रूप माने जाते हैं इनके द्वारा ही भाषा व्यवहार नियोजित होता है। विभिन्न वक्ताओं के लिए विभिन्न सामाजिक संबंधों के अनुरूप भाषाई व्यवस्था या द्विभाषिक स्थिति की स्रष्टि कोड द्वारा ही होती है।

व्यक्ति अपने विभिन्न सामाजिक संबंधो को स्थापित करने के लिए, अपनी स्थिति या पद के अनुसार ऐसे कोड का चयन करता है जिनका सामाजिक संदर्भ उन सामाजिक संदर्भो के अनुकूल हो तथा जिसमे सम्प्रेषणीयता का व्यापार हो सके। सामाजिक संदर्भो के विभिन्नता के अनुरूप पद भी विभिन्न प्रकार हो सकता है। इसीलिए एक ही भाषा समुदाय में विभिन्न प्रकार के कोड मिलते हैं । व्यक्ति अपने प्रत्येक संबंध के लिए अलग अलग कोड का प्रयोग करता है, जैसे यदि एक व्यक्ति अध्यापक है तो वह अपने अधिकारी से जिस कोड में बात करेगा उस कोड में विद्यार्थियों से तथा अपने सहकर्मियों से नहीं क्र सकता।

भाषा और समाज के संबंधों के अध्ययन के लिए समाजभाषाविज्ञान एक आधार माना जाता है जो इनसे जुड़े प्रत्येक पक्ष पर प्रकाश डालता है। समाजभाषाविज्ञान मानता है कि भाषा और समाज के बीच गहरा

और अटूट संबंध होता है और यह संबंध सीधे मनुष्य से जुड़ा होता है। अतः भाषा अध्ययन में दोनों एक दूसरे के संदर्भ के रूप में काम करते हैं।

कोड परिवर्तन की प्रक्रिया में एक भाषा के प्रयोग के तुरंत बाद दूसरी भाषा के वाक्यों का प्रयोग ही कोड परिवर्तन कहलाता है। कोड परिवर्तन की प्रक्रिया कोड मिश्रण के सामान शब्द और पद आदि के स्तर पर घटित नहीं होती बल्कि वाक्य और प्रोक्ति के स्तर पर पूर्ण होती है।

कोड परिवर्तन द्विभाषी या बहुभाषी द्वारा दो या दो से अधिक भाषाओं में बातचीत करते हुए मिश्रण को दर्शाता है। प्रायः इस वार्तालाप में विषय भी नहीं बदलता है। इस प्रकार का मिश्रण भाषिक संरचना के किसी भी स्तर पर स्थान ले सकता है पर यह एक वाक्य के अंदर ही सिमित रहकर जुड़ा रहता है।

साहित्य का समाज और मनोविज्ञान के साथ अन्तरंग संबंध हैं क्योंकि कोई भी साहित्य अपने समाज का प्रतिबिम्ब होता है। तथा किसी भी साहित्य का सृजन अपने समाज के भीतर संपन्न होता है। इस लिए साहित्य पर समाज का गहरा प्रभाव रहता हैं और समाज मानव से मिलकर बनता हैं। वैसे तो समाज मानवेतर प्राणियों का भी होता है परंतु उनका साहित्य नहीं है। इसके पीछे एक ही कारण है। ज्ञान अर्थात मनोविज्ञान का चूँकि मानव एक प्रबुद्ध प्राणी है। जो अपने समाज को अपने ज्ञान द्वारा संचालित करता है। जबकि मानवेतर प्राणी ऐसा नहीं कर सकते।

कोड परिवर्तन से तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसमें वक्ता एक कोड (भाषा) बोलते बोलते दुसरे कोड का प्रयोग करने लगता है। अंग्रेजी में कोड परिवर्तन को 'code switching' कहा जाता है कोड परिवर्तन की प्रक्रिया में एक भाषा के प्रयोग के तुरंत बाद दुसरी भाषा के वाक्यों का प्रयोग ही कोड परिवर्तन कहलाता है।

कोड परिवर्तन वही व्यक्ति कर सकता है जो कम से कम दो भाषाओं को अच्छे से जनता हो क्योंकि कोड परिवर्तन सामान्यतः प्रोक्ति स्तर पर होने वाली प्रक्रिया हैं प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में कोड परिवर्तन के सामाजिक पक्ष –भाषायी संपर्क ,मिश्रित संस्कृति ,धार्मिक राजनीतिक परिस्थिति ,अश्लीलता आदि के कारण कोड परिवर्तन होता है। इसके अलावा कोड परिवर्तन के मनोवैज्ञानिक पक्ष –भावातिरेक ,क्रोध,प्रेम, स्नेह ,लिंग ,मुख-सुख आदि मनोवाज्ञानिक कारणों से कोड परिवर्तन होता है। इसके सभी कारणों को उपन्यासों में उपस्थित पात्रो के संवादों के माध्यम से पता लगाया गया है की किस स्थिति परिस्थिति में वक्ता कोड परिवर्तन करता हैं।

अतः कुल मिलाकर सारांशतः यह कहा जा सकता है कि कोड एक भाषिक संरचना है जो मानव द्वारा संप्रेषण प्रक्रिया में प्रयोग में लाया जाता है। और यह प्रक्रिया समाज संदर्भित होती है जिसमे मानव अपनी इच्छा तथा परिस्थिति अनुसार प्रयोग करता है। जिसमे अपनी बात कि स्पष्टता के लिए कोड परिवर्तन करता है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में कोड परिवर्तन के सभी कारणों एवं परिस्थितियों के प्रति गहन अध्ययन किया गया हैं।

"Social and psychological perspective of code changes"

(Special reference to some Hindi novels)

Code is a sociological language scientific context that relates to various social references used to establish the social relations of the speaker. Code (code of conduct) can be considered as a set of rules. The speakers / users have the basis of mutual perception. The code (language) used by the speaker is defined and operated by the social-cultural system. Speech is considered a symbolic form of social relations, by which language behavior is employed by them. According to different social relations for different speakers, the linguistic arrangement or the bilingual status is only through the cessation code.

In order to establish their various social relations, according to its position or position, it selects code whose social context is suited to those social references, and which can be a business of relativity. Depending on the variation of social references, the post may also be different. That's why different types of codes are available in the same language community. The person uses different codes for each of his relationships, such as if a person is a teacher, then he can not copy the code in which code he speaks with his official and his colleagues.

Social studies are considered to be the basis for studying the relationship between language and society, which puts light on each side connected to it. Social language

believes that there is a deep and inexhaustible relationship between language and society and this relation is directly related to humans. So both work in language study as a reference to each other.

In the process of code conversion, the use of sentences of second language immediately after the use of one language is called code changes. The process of code change does not occur at the level of the code mix and the level of words and phrases, but it is completed at the level of the sentence and the level of affirmation.

The code change reflects the mixture by talking in two or more languages by bilingual or multilingual. Often the topic also does not change in this conversation. This type of mixture can take place at any level of the linguistic structure, but it remains connected by staying within a sentence.

Literature has intimate relationships with society and psychology because any literature is a reflection of its society. And the creation of any literature is done within its own society. So literature has a profound impact on society and society is made up of humans. In any case, the society is also a mortal but it is not literature. There is only one reason behind this. Gnan means psychology because humans are an enlightened creature. Which guides its society through its knowledge. While non-human creatures can’ not do this

Code change refers to the process in which the speaker starts using another code while speaking a language. Code changes in English are called 'code switching'. The use of sentences of second language immediately after the use of a language in the process of code changes is called code changes.

Code change can be done by the same person who has at least two languages better, because the code changes are generally processed at the level of the level of excitement. In the short dissertation, the social aspects of code changes in linguistic contact, mixed culture, religious political situation, Code changes due to obscenity etc. Apart from this, the psychological side of code changes - changes in code changes due to psychological reasons - behavior, anger, love, affection, sex, and pleasure. All of these reasons have been explored through the correspondence of the characters present in the novels, in which case the speaker changes the code.

Therefore, in general it can be said in general that the code is a linguistic structure that is used by humans in the process of communication. And this process refers to the society in which man uses his will and circumstances. In which the code changes for clarity. In the short essay presented, intensive study has been done for all the reasons and circumstances of the code change.